Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

terapanthtimes.com

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत् उवाच
जेहिं काले परक्कंतं,
ण पच्छा परितप्पए।
जो ठीक समय पर पराक्रम करते हैं वे बाद में परिताप नहीं करते।

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 23 • 11 - 17 मार्च, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 09-03-2024 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

आत्मा को निर्मल बनाने के लिए आचार्य प्रवर ने किया अभिप्रेरित

आत्मा की शुद्धि के लिए सम्यक पुरुषार्थ करें : आचार्यश्री महाश्रमण

खांब गांव।
४ मार्च, २०२४

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी आज नागोठाणे से विहार कर खांब गांव पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि आदमी के भीतर गंदगी भी हो सकती है, और शुद्धता भी हो सकती है। आत्मा निर्मल भी बन सकती है तो मलिन भी बन सकती है। पुरुषार्थ शोधि के लिए भी किया जा सकता है और मलिनता के लिए भी हो सकता है।

भाग्य और पुरुषार्थ दो चीजें हैं और दोनों एक दूसरे से जुड़ी हुई हो सकती हैं। भाग्य का कारण पुरुषार्थ बन सकता है, तो कभी भाग्य नियति से भी बन सकता है। शास्त्रों में बताया गया है कि भव्य जीव मोक्ष जाने की अर्हता वाले होते हैं और अभव्य जीव में मोक्ष जाने की अर्हता नहीं होती है। जो अभव्य जीव हैं, वे कितना भी पुरुषार्थ कर लें या उनके लिए कोई दूसरा पुरुषार्थ करले परन्तु अभव्य जीव को भव्य जीव नहीं बनाया जा सकता।

पुरुषार्थ से बहुत कुछ मिल सकता है, पर सब कुछ नहीं मिल सकता। पुरुषार्थ से भाग्य का निर्माण भी हो सकता है, पर नियति को नहीं बदला जा सकता। भाग्य ज्ञातव्य हो सकता है परंतु पुरुषार्थ कर्तव्य होता है। भाग्य जैसा भी है, उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए, पुरुषार्थ करते रहना चाहिए, अच्छा कार्य करते रहना चाहिए। भाग्य भरोसे बैठने वाला, हाथ पर हाथ धरकर बैठने वाला आदमी अभागा हो सकता है।

> सफलता का पौधा परिश्रम के जल का सिंचन मांगता है। उपयुक्त परिश्रम सबको करना चाहिये, चाहे वह छोटा हो या बड़ा।
> -आचार्यश्री महाश्रमण

जो उद्योगी, पुरुषार्थी आदमी होता है, लक्ष्मी उसका वरण करती है। सफलता का पौधा परिश्रम के जल का सिंचन मांगता है। उपयुक्त परिश्रम सबको करना चाहिये चाहे वह छोटा हो या बड़ा। आलस्य में बैठने वाले व्यक्ति के भाग्य का देवता रूठ सकता है। व्यक्ति को परिश्रम, उद्यम और धैर्य की आवश्यकता है। कई बार परिश्रम का परिणाम जल्दी मिल जाता है तो कभी देरी से, देर भले हो पर अन्धेर नहीं होती।

हमें आत्मा की शुद्धि के लिए सम्यक् पुरुषार्थ करना चाहिये। जो ऋजु-सरल होते हैं, उनकी शुद्धि हो सकती है। प्रायश्चित में आलोचन अच्छा होना चाहिये। दोषों का प्रायश्चित नहीं होता है, छल कपट करके दोषों को छुपाया जाता है तो आत्मा आयुष्य पूर्ण होने पर कुछ गंदगी साथ लेकर जा सकती है। इन दोषों, पापों की गन्दगी यहीं छूट जानी चाहिए। शुद्ध, निर्मल होकर आत्मा गति करेगी तो आगे भी अच्छा रहेगा। मृत्यु के बाद शरीर की स्नान तो लोग करवा देते हैं पर आत्मा की स्नान तो मृत्यु से पहले-पहले खुद को ही करनी होती है। आत्मा मलिन है तो आगे भी स्थान मलिन ही मिलेगा, मोक्ष मार्ग में भी रुकावट आ सकती आ सकती है। शुद्धि उसकी होती है जो ऋजुभूत होता है, सरल होता है। जो शुद्ध होता है, उसके भीतर धर्म ठहरता है। जिसके भीतर धर्म है, वह निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। हम शुद्धता को प्राप्त करने का प्रयास करें। बुरे कार्यों से बचने का प्रयास करें। अशुद्धि को प्रायश्चित-आलोयणा से दूर करने का प्रयास करें।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

इच्छा को आकाश के समान अनंत बताया गया है।

त्याग और संयम से प्रस्फुटित हो सकता है आनंद : आचार्यश्री महाश्रमण

नागोठाणे।
३ मार्च, २०२४

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी कोंकण क्षेत्र की यात्रा के अंतर्गत नागोठाणे पधारे। मंगल प्रवचन में आचार्य प्रवर ने फरमाया- आदमी के मन में इच्छाएं उभरती हैं। जब इच्छा लोभ के रूप में हो जाती है तो वह आगे से आगे बढ़ती रहती है। इच्छा का कोई पार नहीं है। इच्छा को आकाश के समान अनंत बताया गया है। जैसे आकाश का कोई ओर-छोर नहीं होता वैसे ही इच्छा भी बढ़ते-बढ़ते अंत हीन हो सकती है।

इच्छा आध्यात्मिक रूप में भी हो सकती है। कोई ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की आराधना की इच्छा कर सकता है, किसी के कल्याण, आध्यात्मिक सेवा की इच्छा कर सकता है। अच्छी इच्छा कल्याणकारी हो सकती है। भौतिक लालसा जब लोभ का रूप ले लेती है तो आत्मा का अहित हो सकता है। बहुत कुछ पास में होकर भी आदमी दुखी हो सकता है और दूसरी ओर जिसके पास बहुत कम है वह सुखी भी हो सकता है।

एक ज्ञानी महात्मा प्रवचन दे रहे थे। प्रवचन के बाद एक युवक ने उनसे पूछा कि आपके सामने बैठी इतनी जनता में सबसे ज्यादा सुखी कौन है? महात्मा ने कहा कि अंतिम पंक्ति में बैठा अमुक युवक सुखी है। लोगों ने पता किया तो वह गांव का गरीब आदमी निकला। लोगों ने कहा कि आप राजा या नगर सेठ को सुखी कहते तब तो बात समझ में आती पर वह गरीब आदमी सुखी है यह बात समझ में नहीं आई । संयोग से वहां राजा और नगर सेठ भी उपस्थित थे। उनसे पूछा गया कि क्या आप सुखी हैं ? अन्य भी और लोगों से पूछा गया तो एक का भी उत्तर सकारात्मक नहीं निकला। जब उस लड़के को पूछा गया तो उसने कहा कि मैं तो पूर्ण रूप से सुखी हूं, संतुष्ट हूं। कोई चिंता नहीं, तनाव नहीं, दुःख नहीं, रोग नहीं। पदार्थों के होने पर भी आदमी भीतर से दुखी हो सकता है और कम संसाधन होने पर भी आदमी आनंद में रह सकता है। भीतर की शांति का संबंध साधना से है, बाहर के पदार्थ या संसाधनों से सुविधा तो मिल सकती है, पर शांति नहीं मिल सकती। साधना से शांति मिल सकती है। (शेष पृष्ठ २ पर)

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

संपत्ति और विपत्ति में रखें एकरूपता : आचार्यश्री महाश्रमण

आमटेम।
२ मार्च, २०२४

समत्व के साधक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी आज रायगढ़ जिले के आमटेम गांव पधारे। अणुव्रत अनुशास्ता ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में फरमाया कि मनुष्य के भीतर अनेक वृत्तियां हैं। गुस्सा, अहंकार, माया, लोभ, राग, द्वेष और घृणा जैसी बुरी वृत्तियां तो दूसरी ओर क्षमा, निरहंकारिता, सरलता, संतोष, वीतरागता, अघृणा और प्रमोद भाव जैसी सद्वृत्तियां भी होती हैं।

भीतर की वृत्ति जब उभरती है तब आदमी उस प्रकार की प्रवृत्ति की ओर उद्यत हो सकता है। हम असद् भावों को अस्तित्वहीन बनाने का और सद्भावों को पुष्ट बनाने का प्रयास करें। कभी-कभी मन, वचन और शरीर के स्तर पर असहिष्णुता भी आ सकती है। उसे भी सहन करने का हम प्रयास करें। क्रोध और अहंकार भी जुड़े हुए हैं। यदि हमारा अहंकार चला जाए तो गुस्सा भी रह नहीं पाएगा।

भगवान महावीर ने कितने परिषह, उपसर्ग सहे थे। एक और चंडकौशिक सर्प का उपसर्ग और दूसरी ओर देवेन्द्र द्वारा प्रणमन, अनुकूल और प्रतिकूल दोनों स्थिति में वे सम रहे। आचार्य भिक्षु के जीवन में भी प्रतिकूलता वाली स्थितियां आई थी। सातों सुख किसी को जीवन भर मिले, यह कहना कठिन है पर समता रूपी साता मन में रखने का प्रयत्न अवश्य करें। यह सोचें कि पूर्व कृत पुण्य और पाप कर्म के बंध के कारण अनुकूलता या प्रतिकूलता की स्थिति आई है।

संपत्ति और विपत्ति में महान लोगों के मन की एकरूपता रहनी चाहिये। सदा एक जैसे दिन नहीं रहते, काल का चक्र घूमता रहता है। राजा रामचंद्र जी के जीवन में भी कितनी कठिनाइयां आई थी। हम भी अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों में समता रखने का प्रयास करें। कहा गया है- पुरुष ! अपने पर ही निग्रह करो, दुःख से मुक्त हो जाओगे। अपने आप का, अपनी आत्मा का, दमन करने से संयमित आत्मा सुखी बन जाती है। पूज्य प्रवर के स्वागत में आमटेम गांव के सरपंच श्री लक्ष्मण तांबोली ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

त्याग और संयम से प्रस्फुटित हो सकता है आनंद : आचार्यश्री महाश्रमण

कठोर जीवन होने पर भी एक साधु शांति में, आनन्द में रह सकता है। जो आनंद गृहस्थ को नहीं मिलता वह साधु को मिल सकता है। जहां त्याग और संयम है वहां आनंद प्रस्फुटित हो सकता है। जो भौतिकता और आसक्ति में रचा-पचा है, वह शान्ति-आनन्द की अनुभूति नहीं कर सकता। धन पुण्य के योग से मिल सकता है, पर धन शान्ति नहीं दिला सकता। धन का दुरुपयोग न करें, घमंड न करें, मोह न रखें तो धन होकर भी शांति मिल सकती है। संयम हो तो धन शान्ति और आनन्द दे सकता है। पास में पदार्थ हैं, धन है, तो भी व्यक्तिगत जीवन में संयम रहें।

साधना, अध्यात्म, अनासक्ति, शांति का आधार है, चेतना की निर्मलता के तत्त्व हैं। जहां संतोष है वहां परम सुख हो सकता है। मोह ग्रस्त लोग असंतोष में परायण करने वाले होते हैं, पंडित लोग शान्ति को धारण करने वाले होते हैं। आदमी संतोषी है तो वह शांति में रह सकता है। जैन धर्म में अहिंसा, अपरिग्रह, इच्छा परिमाण, संयम, समता, तप की बात बताई जाती है। साधु के जीवन में तो साधना होनी ही चाहिए, गृहस्थ के जीवन में भी साधना चले। छोटे-छोटे बच्चों में, ज्ञानशाला के बच्चों में भी अच्छे संस्कार आएं।

भगवान महावीर से जुड़े हुए इस जैन शासन में साधु भी हैं, श्रावक भी हैं, जो साधना और सेवा करने वाले हैं। हम लोकोत्तर अनुकंपा को धारण करें, जो आत्मा को उन्नयन की ओर ले जाने वाली है। जहां आत्मा के हित की बात है, वह लोकोत्तर अनुकंपा है। जहां शरीर के हित की बात है, भौतिकता से जुड़ाव है वह लौकिक अनुकंपा है। हमारी भौतिक इच्छाएं कम हो, दया, संयम और अध्यात्म की भावना पुष्ट होती रहे तो वह कल्याण की बात हो सकती है।

मंगल प्रवचन से पूर्व श्वेतांबर मूर्ति पूजक आम्नाय की अचलगच्छ परंपरा के मुनिगुणवल्लभ सागरजी पूज्य सन्निधि में पहुंचे। पूज्य प्रवर ने यात्रा के दो प्रकारों का विश्लेषण करते हुए कहा कि साधु के तो संयम की यात्रा आठों ही प्रहर चलती है, यह अंतर्यात्रा मंजिल प्राप्त होने तक चलती रहे। दूसरी यात्रा जो पैरों से जुड़ी है, वह भी धर्म यात्रा के रूप में यथा औचित्य होती रहे। मुनि गुणवल्लभसागरजी ने कहा कि बसंत के आने से प्रकृति मुस्कुराती है और आचार्य श्री जैसे सन्तों के आने से देश की संस्कृति मुस्कुराती है। आपने आचार्य महाप्रज्ञ जी के साहित्य एवं तेरापंथ में विनय की मुक्त कंठों से प्रशंसा की।

प्रवचन के उपरांत श्रीमती शांतिबाई ओटरमल जैन आयुर्वेदिक कॉलेज की ओर से श्री किशोर जैन ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कॉलेज परिसर में बनने वाले हॉस्टल का नाम आचार्यश्री के नाम से रखने की अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

संसार में रहते हुए भी अनासक्ति की करें साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

गड़ब।
१ मार्च २०२४

महान यायावर आचार्य श्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ आज गड़ब पधारे। आर्हत् वांग्मय की अमृत देशना प्रदान कराते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि जीवन में दो तत्त्व हैं - चेतन और अचेतन अर्थात् आत्मा और शरीर। न केवल हमारे जीवन में अपितु पूरी दुनियां में भी जीव और अजीव के सिवाय और कुछ भी नहीं है। आत्मा और शरीर ये दोनों अलग-अलग अस्तित्व वाले हैं, आत्मा स्थायी है, यह स्थूल शरीर नाशवान है। एक सिद्धान्त है कि आत्मा अलग है, शरीर अलग है। एक दूसरा सिद्धांत यह भी है कि जो जीव है, वही शरीर है, अलग-अलग नहीं है। जैन दर्शन का मंतव्य है कि जीव अलग है, शरीर अलग है।

आत्मा भिन्न-शरीर भिन्न है,
एक नहीं संजोना,
है मिट्टी से मिला जुला, पर
आखिर सोना सोना।।

जैसे सोना मिट्टी से मिला होने के बाद भी अलग होता है, वैसे ही आत्मा और शरीर भी मिले-जुले होने के बाद भी अलग-अलग होते हैं।

व्यक्ति इस शरीर और अन्य अनेकों पदार्थों के प्रति मोह-ममत्व कर लेता है। आदमी शरीर को अपना मान लेता है, पर यह शरीर हमेशा साथ नहीं रहने वाला। हम यह चिंतन करें कि मैं आत्मा हूं, मैं शरीर नहीं हूं।

अध्यात्म का एक तत्त्व है- ममत्व को छोड़ना। संसार में रहते हुए भी अंदर में मोह न हो, अनासक्ति हो। आसक्ति बंधन है, अनासक्ति मुक्ति की साधना है। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी मोह को कम करने का प्रयास करें। जिस प्रकार कमल का पत्ता पानी में रहते हुए भी निर्लिप्त रहता है उसी प्रकार गार्हस्थ्य में रहते हुए भी आदमी निर्लेप रहने का प्रयास करे।

डॉ नरेश पालविया एवं उनकी धर्मपत्नी ने पूज्य प्रवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अणुव्रत भवन में आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन

दिल्ली।

अणुव्रत भवन में धर्मसंघ की साध्वी अणिमाश्री जी एवं साध्वी संगीतश्री जी का आध्यात्मिक मिलन का भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वी अणिमाश्री जी अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ साध्वी संगीतश्री जी की अगवानी में पधारे। मार्ग में जब साध्वियों का परस्पर मिलन हुआ तो विनय व वात्सल्य का विलक्षण नजारा देखकर दर्शक गदगद हो गए।

साध्वी अणिमाश्री जी ने अभ्यागत साध्वी जी का स्वागत करते हुए कहा हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें तेरापंथ धर्मसंघ मिला है। तेरापंथ धर्मसंघ की भक्ति, शक्ति एवं अनुरक्ति अनुपम है। ऐसे दृश्य तेरापंथ धर्मसंघ में ही दृष्टिगोचर हो सकते हैं। आज तेइस वर्षों के बाद साध्वी संगीतश्री जी से मिलना हुआ। साध्वी संगीतश्री जी ऋजुमना, श्रमशील एवं कर्मठ साध्वी हैं। संघ की प्रभावना में श्रम स्वेद बहाने वाली साध्वी है। इन्होंने दक्षिणांचल एवं पूर्वांचल की यात्रा कर संघ की खूब प्रभावना की है।

पूज्यप्रवर ने महत्ती कृपा कर इस बार आपका चतुर्मास शाहदरा में फरमाया है। शाहदरा दिल्ली का सघन एवं अच्छा क्षेत्र है। साध्वी संगीतश्री जी का सिंघाड़ा तप के क्षेत्र में विशिष्ट सिंघाड़ा है। चारों साध्वियां चार वर्षों से निरन्तर वर्षीतप कर रही है। पूरा सिंघाड़ा वर्षीतप करने वाला संभवतया पहला सिंघाड़ा है। आपका दीक्षा का 50 वर्ष प्रारंभ हुआ है। संयम की अर्धशती के प्रवेश पर हम मंगलकामना करते हैं। सहवर्ती तीनों साध्वियां होशियार, विवेकी एवं विनयशील हैं। आप सभी का श्रम संघ की पोथी में सृजन के आलेख लिखे।

मर्यादा व अनुशासन के परकोटे में रहने वाला व्यक्ति विकास के शिखर पर आरोहण करता है।

साध्वी संगीतश्री जी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए कहा- तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादित एवं अनुशासित धर्मसंघ है। मर्यादा व अनुशासन के परकोटे में रहने वाला व्यक्ति विकास के शिखर पर आरोहण करता है। मर्यादा के कल्पतरू की छांव में बैठने वाला व्यक्ति जीवन में आनंद की बंशी बजाता है। हमारे जन्म-जन्मांतरों के पुण्य फले हैं, जिससे हमें ऐसा धर्मसंघ मिला है।

साध्वीश्री ने कहा आज हमारा तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट साध्वी अणिमाश्री जी से मिलन हुआ है। मैं इनको अपना ज्ञानदाता मानती हूं। इनका ज्ञान निर्मल है, ज्ञान के प्रति अभिरुचि है। आपकी प्रवचन शैली सरस एवं बेजोड़ है आपका प्रवचन जन-जन के लिए आकर्षण का केन्द्र है। आपने साधना से अपने व्यक्तित्व को आभामंडित किया है। आप जहां भी जाती हैं अपनी विशिष्ट छाप छोड़कर आती हैं। आपके भीतर काम करने का जज्बा है। हम आपके जीवन से, आपके अनुभवों से, आपकी कार्यशैली से कुछ सीखें, ऐसी अपेक्षा है। आपने अपनी सहवर्तिनी साध्वियों को भी अच्छा तैयार किया। सबको देखकर प्रसन्नता की अनुभूति होती है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी डॉ. सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी, साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने अभ्यागत साध्वी वृन्द का गीत के माध्यम से स्वागत किया। साध्वी शांतिप्रभाजी, साध्वी कमलविभाजी एवं साध्वी मुदिताश्री जी ने तेरापंथ धर्मसंघ के "ट्युरिस्ट की सैर" करवाकर सबका मन मोह लिया। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने मंच का कुशल संचालन किया।

दिल्ली सभाध्यक्ष श्री सुखराज जी सेठिया, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालालजी बैद, कुसुम खटेड़, फरीदाबाद से नरेन्द्र घोषल ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। पूर्वी दिल्ली महिला मंडल ने स्वागत में सुमधुर गीत का संगान किया।

सेवा के माध्यम से निर्जरा करने पहुँची साध्वियां

गंगाशहर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गंगाशहर द्वारा शांति निकेतन प्रांगण में साध्वी चरितार्थप्रभा जी व साध्वी प्रांजलप्रभा जी का स्वागत समारोह आयोजित किया गया। इस पावन अवसर पर शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी ने नव आंगुतक साध्वियों का स्वागत करते हुए कहा कि हमारा धर्म संघ सुसंगठित है। धर्म संघ में सेवा को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सेवा के ध्येय को लेकर आने वाली सभी ९ साध्वियों का स्वागत करते हैं।

तेरापंथ धर्म संघ में सेवा को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

साध्वी ललितकला जी ने अपने उद्बोधन में सेवा के महत्त्व को उद्घाटित करते हुए कहा कि सेवा को सीप की उपमा दी गई है। जिस प्रकार सीप मोती बन जाता है, आप भी उसी प्रकार मोती की तरह उजले बनें।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि हम यहां पुण्यानुबंधी व कल्याणानुबंधी निर्जरा के लिए आए हैं। सेवा के माध्यम से महानिर्जरा करना हमारा उद्देश्य है। साध्वी आर्यप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण से किया गया। सेवाग्रही रत्नाधिक साध्वियों तथा महिला मंडल द्वारा सामूहिक स्वागत गीतिका का संगान किया गया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेरापंथ न्यास के ट्रस्टी जैन लूणकरण छाजेड़, शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष हंसराज डागा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अरुण नाहटा, तेरापंथी सभा बोरावड के मंत्री रायचंद बोथरा, अणुव्रत समिति के मंत्री मनीष बाफना, किशोर मंडल के सहसंयोजक विशाल सेठिया, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी जयेश छाजेड़ ने स्वागत में अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम में साध्वी शशिरेखा जी व साध्वी ललितकला जी ने सेवा केंद्र व्यवस्थापिका का दायित्व एक सुमधुर गीतिका के संगान के साथ साध्वी चरितार्थ प्रभा जी व साध्वी प्रांजलप्रभा जी को सौंपा। कार्यक्रम का सफल संचालन देवेंद्र डागा ने किया।

१६0वाँ मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम

विलुपुरम।

साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तमिलनाडु के विलुपुरम में मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

डॉ0 साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि मर्यादा व्यवस्था है, बंधन नहीं। यह बंधन मुक्ति का साधन है। मर्यादा, अनुशासन, समर्पण, सेवा, सहयोग, संगठन का दूसरा रूप है तेरापंथ।

तेरापंथ धर्मसंघ आज तक एक आचार्य, एक आचार, एक विचार के मार्ग पर चल रहा है, इसका मुख्य कारण है तेरापंथ की मर्यादा का स्वीकरण।

साध्वी मेरूप्रभा जी ने गीतिका की सुमधुर प्रस्तुति दी। साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। साध्वी मेरूप्रभा जी व साध्वी दक्षप्रभा जी के निर्देशन में संविधान नाटक का संचालन किया। ज्ञानशाला, किशोर मंडल और महिला मंडल संघ का संविधान विषय पर नाट्य प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। मंगलाचरण की प्रस्तुति कन्या मंडल के द्वारा दी गई। सभी का स्वागत सभा अध्यक्ष महेंद्र धोका ने किया। महिला मंडल के द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मयंकप्रभा जी ने किया। आभार ज्ञापन राजेश सुराणा ने किया।

सर्वाइकल कैंसर विषय पर सेमिनार का आयोजन

औरंगाबाद।

तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, औरंगाबाद के संयुक्त तत्वावधान में किशोरावस्था की दहलीज पर सर्वाइकल कैंसर और उसके प्रतिबंधात्मक उपाय विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया।

इस विषय पर डॉ. श्रद्धा परितकर ने महिलाओं को विविध विषयों पर मार्गदर्शन देते हुए महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को स्वस्थ रखने के उपाय भी बताए। मुख्य अतिथि का स्वागत महिला मंडल की ओर से मंत्री लता सेठिया और तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष डॉ. आनंद नाहर ने किया।

महिला मंडल की ओर से सुंदर गीतिका की प्रस्तुति हुई। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के मंत्री श्रेय मुथा ने प्रमुख अतिथि का परिचय दिया और विषय की विस्तृत जानकारी दी।

महिला मंडल की सहमंत्री ललिता सांखला ने अपने भाव व्यक्त किये। आभार ज्ञापन तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री लता सेठिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ के मेडिकल प्रभारी डॉ. रुपाली नाहर ने किया।

तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन

रिश्तों में हो सामंजस्य की भावना

अररिया

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार रिलेशनशिप स्किल्स के अंतर्गत 'अनमोल रिश्ता सास बहू का' एवं 'नाजुक सा रिश्ता ननद-भाभी का' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला दो चरणों में संपादित की गयी। पहले चरण में तेरापंथ प्रबोध का सामूहिक संगान कर कार्यशाला का शुभारंभ किया गया, तत्पश्चात प्रेरणा गीत द्वारा मंगलाचरण किया गया। मंत्री सुरभि दुगड़ ने स्वागत वक्तव्य में सास-बहू, ननद-भाभी के रिश्ते की महत्ता को समझाया, और कविता के माध्यम से ननद-भाभी के रिश्ते का वर्णन किया। भीखी देवी घोषल और सुमन घोषल ने सास-बहू के संबंधों पर एक लघु नाटिका प्रस्तत की । प्रियंका बेगवानी और समृद्धि बेगवानी ने ननद-भाभी के रिश्तों पर एक परिसंवाद प्रस्तुत किया। कार्यशाला में सभी संभागी जोड़ों ने अपने अनुभव साझा किए। कविता बोथरा ने अपने वक्तव्य में बताया कि रिश्तों में किस प्रकार मिठास लाई जा सकती है। दूसरे चरण में अध्यक्ष सरिता बेगवानी ने भिक्षु अष्टकम के संगान के पश्चात रिश्तों में मधुरता लाने के प्रयोग बताए। आपने कहा कि विश्वास और समर्पण को ही हर रिश्ते की नींव है।

राउरकेला

तेरापंथ महिला मंडल राउरकेला ने "नाजुक सा रिश्ता - ननद भाभी का" कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ हुई। मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। संपत भंसाली ने सभी को मैत्री की अनुप्रेक्षा का प्रयोग करवाया। अध्यक्ष तरुलता जैन ने उपस्थित सभी बहनों का स्वागत करते हुए कहा कि ननद-भाभी हमउम्र होने से एक दूसरे की हमदर्द व अच्छी दोस्त होती है और एक पुल की तरह परिवार के हर सदस्य को जोड़ कर परिवार के माहौल को खुशनुमा रखती है। कोमल डोसी, ज्योति नाहटा, मीनाक्षी कोठारी तथा स्नेहलता चोरड़िया ने ननद भाभी के रिश्ते पर अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि प्रमोद भावना, मैत्री भावना व करुणा भावना से रिश्तों को मजबूत बनाया जा सकता है। ननद-भाभी की खट्टी-मीठी नोक-झोंक पर कनक दुगड़ व कुसुम पुगलिया ने बहुत ही रोचक नाटक प्रस्तुत किया। कार्यशाला में ननद भाभी की पांच जोड़ियों ने भाग किया। ऋतु और पूजा दुगड़ की जोड़ी प्रथम स्थान पर रही। सभी जोड़ियों को पुरस्कृत किया गया। कायक्रम का कुशल संचालन मोनिका बोथरा तथा नेहा जैन ने किया। आभार ज्ञापन सुनिता कोठारी ने किया।

इरोड

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल ईरोड ने 'नाजुक सा रिश्ता ननद-भाभी' कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत मंडल की बहिनों ने मंगलाचरण के द्वारा की। मण्डल की बहन शिल्पा सेठिया, प्रज्ञा सुराणा, उषा हिरण, अमिता बैद ने ननद-भाभी के अनमोल रिश्तों के बारे में जानकारी दी। सभी बहनों ने बहुत ही सुंदर शब्दों में ननद और भाभी के अनमोल रिश्ते की व्याख्या की। कार्यक्रम में २१ बहिनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री पूनम दुगड़ एवं धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री प्रज्ञा सुराणा ने किया।

नवरंगपुर

तेरापंथ महिला मंडल नवरंगपुर द्वारा "नाजुक सा रिश्ता ननद भाभी का" कार्यशाला संजय गरिमा सुराणा के निवास स्थान कर आयोजित की गई। प्रेरणा गीत से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। अध्यक्ष बॉबी जैन ने कहा ननद-भाभी आपस में सखियां व दोस्त होती हैं। थोड़ी नोकझोंक भी रहता है तो प्यार भी बहुत होता है। बृजलता लूनिया, गरिमा सुराणा और स्नेहा सुराणा ने एक नाटिका की प्रस्तुति दी। अंत में गरिमा सुराणा ने सबका आभार व्यक्त किया।

नालासोपारा, मुंबई

तेरापंथ भवन के प्रांगण में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल नालासोपारा द्वारा मासिक कार्यशाला रिलेशनशिप स्किल्स के अंतर्गत "नाजुक सा रिश्ता ननंद भाभी का" कार्यशाला का सुंदर आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उपासिका बहिनों द्वारा नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत की सुंदर प्रस्तुति से की गई। महिला मंडल अध्यक्षा मानसी मेहता ने उपस्थित सभी बहनों का स्वागत किया एवं ननद-भाभी के रिश्ते पर अपने विचारों की सुंदर प्रस्तुति दी। उपासिका मंजू बाफना एवं प्रेमा धाकड़ ने ननद - भाभी के रिश्ते पर प्रकाश डाला और संयम, तप, चारित्र के गुणों पर विस्तार सें प्रस्तुति दी। कार्यशाला में बहिनों की ३ जोड़ियां सहभागी बनी। कार्यक्रम का कुशल संचालन सोनल मेहता और आरती कोठारी ने किया और आभार-ज्ञापन महिला मंडल मंत्री प्रवीणा खाब्या ने किया।

जसोल

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वाधान में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा साध्वी रतिप्रभाजी के सानिध्य में रिलेशनशिप स्किल कार्यशाला के अंतर्गत 'नाजुक सा रिश्ता ननद–भाभी का' आयोजन किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत से मंगला चरण किया गया। अध्यक्ष कंचनदेवी जैन ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। मंत्री अरुणा डोसी ने बताया कि कुल ७ जोड़ियों ने कार्यशाला में भाग लिया। पुष्पा देवी बुरड़, मोहनी देवी संकलेचा, लीला देवी सालेचा, जसोदा संकलेचा सहित अनेक जोड़ों ने अपने खट्टे - मीठे अनुभव सुनाए। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि मां बेटी का रिश्ता खून का होता है, इसलिए बहुत खास एवं भावुक होता है। वहीं ननद-भाभी का रिश्ता खून का न होने पर भी बहुत खास, एक दूसरे के प्रति सम्मान और वास्तल्य से भरा होता है। साध्वीश्री ने 'मैत्री की अनुप्रेक्षा' का प्रयोग करवाया।

साध्वी रतिप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि एक लड़की जब ससुराल आती है तो सबसे खास रिश्ता ननद का होता है, जिसके साथ वह बिना डर के अपनी फीलिंग, अपना अनुभव शेयर कर सकती है, क्योंकि इनके बीच उम्र का फ़र्क ज्यादा नहीं होता है। इसके कारण दोनों के बीच दोस्ती वाला रिश्ता बन जाता है।

सभी रिश्तों की अपनी-अपनी मर्यादा होती है जिससे परिवार सुखी बनता है। कार्यक्रम का सफल संचालन मीना गोलेच्छा ने किया और आभार ज्ञापन पूर्व मंत्री ममता मेहता ने किया।

राजलदेसर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा "नाजुक सा रिश्ता ननद-भाभी का" कार्यशाला शासनश्री साध्वी मानकुमारी जी एवं साध्वी समन्वयप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तत्पश्चात ज्ञानशाला की ज्ञानार्थी दिव्या बैद ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। महिला मंडल की अध्यक्षा सविता बच्छावत ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत किया।

"नाजुक सा रिश्ता ननद-भाभी का" विषय पर साध्वीश्री जी ने प्रेरणादायी उद्बोधन देते हुए कहा कि यह संसार संबंधों की दुनिया है जिसमें ननद-भाभी का भी एक संबंध समाहित है। जहां भी संबंध हैं वहां मिठास रहे इसके लिए हमारे अंदर समता, सहिष्णुता होनी चाहिए, एक दूजे के प्रति प्रेम प्यार होना चाहिए, गुणानुवाद की भावना, प्रमोद भावना होनी चाहिए तभी घर स्वर्ग बन सकता है। प्रमोद भावना, मैत्री भाव व करूणा भावना से रिश्तों को मजबूत बनाया जा सकता है।

दोषारोपण, दलबंदी व आग्रह के स्थान पर धन्यवाद, कृतज्ञता के भाव से एक दूसरे के साथ रिश्ते में सरसता लाने का प्रयास करें। इस अवसर पर साध्वी समन्वय प्रभा जी ने कहा परिवार एक बगीचा है और रिश्ते इसके रंग बिरंगे फूल हैं। ननद भाभी के रिश्ते में लर्निंग, लिविंग, लाफिंग और लविंग का समावेश होना चाहिए तभी ननद-भाभी का रिश्ता मजबूत बन सकता है। साध्वी कमलयशाजी एवं साध्वी चैत्यप्रभाजी ने गीत का सुमधुर संगान किया। महिला मंडल ने प्रेरणा गीत की प्रस्तुति दी। हेमलता घोषल ने अपने विचार व्यक्त किए।

ननद-भाभी के नाजुक रिश्तों पर महिला मंडल की सदस्याओं ममता कुंडलिया, मोनिका बैद, रीना बैद एवं ज्योति बरड़िया ने लघु नाटिकाओं की बहुत ही रोचकता से प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल एवं मंत्री रजत बैद ने अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् और समण संस्कृति संकाय के संयुक्त तत्त्वावधान में सम्यक् दर्शन कार्यशाला की परीक्षा में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए तथा महिला मंडल ने ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं, तत्वज्ञान परीक्षा एवं जैन विद्या की परीक्षा में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम का कुशल संचालन सविता बच्छावत ने किया।

भिवानी

अभातेममं, भिवानी द्वारा निर्देशित कैंसर जागरूकता अभियान का आयोजन तेमम द्वारा स्थानीय भारद्वाज हॉस्पिटल में साध्वी अमितयशा जी एवं साध्वी कारुण्यप्रभा जी के सान्निध्य में किया।

सर्वप्रथम कार्यशाला का शुभारंभ साध्वी अमितयशा जी और कारुण्यप्रभा जी द्वारा नवकार महामंत्र के उच्चारण के साथ हुआ। अध्यक्ष सीमा जैन ने स्वागत भाषण के साथ मुख्य अतिथि का परिचय दिया। कार्यशाला में उपस्थित मुख्य वक्ता सीनियर डॉक्टर कमला भारद्वाज ने बहनों को ब्रेस्ट कैंसर और सर्वाइकल कैंसर के बारे में जानकारी दी। निरंतर चैकअप की महत्ता बताई। कैंसर के कारण और बचाव के बारे में जानकारी दी। मंडल की ओर से सरिता जैन, मंजु जैन और मोनिका जैन ने डॉक्टर को शॉल एवं साहित्य भेंट करके सम्मानित किया। कार्यशाला में कुल १५ बहनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन और धन्यवाद ज्ञापन मंत्री संस्कृति जैन ने किया।

संक्षिप्त खबर

'युवानुशासनम्' कार्यशाला का आयोजन

सिटीलाइट, सूरत। तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के अंतर्गत 'युवानुशासनम्' का आयोजन किया गया। मुनि उदितकुमार जी के मंगल पाठ एवं मुनि अनंत कुमार जी के मंगल उद्बोधन से कार्यशाला प्रारंभ हुई। सीपीएस नेशनल प्रोविजनल ट्रैनर चिराग पामेचा द्वारा युवाओं को स्वयं के प्रति, संघ के प्रति और समाज के प्रति दायित्व बोध की विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यशाला में ४६ संभागियों ने उत्साह के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, जिनमें अभातेयुप सदस्य, तेयुप सूरत अध्यक्ष सचिन चंडालिया, तेयुप पदाधिकारी, सीपीएस स्थानीय ट्रेनर्स, पीडीडब्ल्यू टीम की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री श्रेयांस सिरोहिया ने किया।

कांदिवली में सभा आपके द्वार, परिवारों की सार संभाल यात्रा

कांदिवली (मुंबई)। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कांदिवली के ऊर्जावान, अध्यक्ष पारसमल दुगड़, मंत्री अशोक हिरण के कुशल नेतृत्व व मार्गदर्शन में हर परिवार से रूबरू एवं सार संभाल यात्रा सभा आपके द्वार दूसरी बार तिविहार त्याग के साथ घर-घर अलख व अध्यात्म की ज्योत जला रही है। गुरुदेव के मुंबई चातुर्मास से पहले 'सभा आपके द्वार' यात्रा की जबरदस्त सफलता के बाद पुनः अपने कार्यकाल में दूसरी बार यात्रा कर एक नए इतिहास का सृजन करने जा रही है। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य धर्मसंघ के सभी अवदानों की जानकारी प्रदान करना तथा अधिक से अधिक लोगों को प्रेक्षा ध्यान, शनिवार की सामायिक, ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी से जुड़ने की प्रेरणा देना है। पदाधिकारियों के साथ क्षेत्रीय प्रभारी एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं के सहयोग से इस यात्रा से लोगों में उत्साह की लहर है।

अणुव्रत संकल्प यात्रा का पाँचवा चरण

जयपुर। महात्मा गांधी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बड़ौदिया बस्ती, जयपुर स्टेशन रोड के तीस छात्र-छात्राओं ने डॉ. जयश्री सिद्धा के निर्देशन में प्रधानाचार्या सुषमा शर्मा के नेतृत्व में अणुव्रत संकल्प यात्रा की। अणुव्रत संकल्प यात्रा में अणुव्रत समिति जयपुर की परामर्शक तथा भारत जैन महिला मंडल अध्यक्ष स्वयंप्रभा गधैया, मंत्री शीला नाहटा तथा अन्य शिक्षक उपस्थित थे। ४ किमी की अणुव्रत संकल्प यात्रा विद्यालय से प्रारंभ होकर सदर थाना स्टेशन होते हुए कानजी रेस्टोरेंट से विद्यालय तक की गयी। अणुव्रत संकल्प यात्रा के पश्चात डॉ. जयश्री सिद्धा ने सभी विद्यार्थियों को अणुव्रत आचार संहिता का वाचन करवाया। स्वयंप्रभा गधैया ने अणुव्रत की विद्यार्थी जीवन में प्रासंगिकता के बारे में बताया ।

आठवीं वर्षगांठ पर भिक्षु भक्ति का आयोजन

काजुपाड़ा (कुर्ला) मुंबई। काजुपाड़ा तेरापंथ सभा भवन की आठवीं वर्षगांठ पर भव्य भिक्षु भक्ति का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तेयुप अध्यक्ष नरेश पगारिया ने सभी का स्वागत किया। घाटकोपर से पधारे विकास सुराणा एवं साकीनाका से पधारे रमेश सिंघवी ने एक से बढ़कर एक भक्ति गीतों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल एवं पूरे समाज की सराहनीय उपस्थिति एवं सहयोग प्राप्त हुआ।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

■ **साउथ हावड़ा।** डूंगरगढ़ निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी रंजीत पुगलिया के पुत्र व पुत्रवधु विक्रम-मीनल पुगलिया के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के सहयोग से सम्पादित हुआ। संस्कारक संजय पारख एवं बीरेंद्र बोहरा ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया। परिषद् के मंत्री अमित बेगवानी ने शिशु के मंगल भविष्य की मंगलकामना दी।

■ **गंगाशहर।** बीकानेर निवासी मीनाक्षी-लूणकरण बुच्चा के सुपुत्र एवं पुत्रवधु आशीष-दिव्या बुच्चा की नवजात पुत्र रत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में जैन संस्कारक पवन छाजेड, विनीत बोथरा ने विधि विधान पूर्वक मंगल मंत्रोचार सहित जैन संस्कार विधि से नामकरण का कार्यक्रम करवाया।

कार्यालय उद्घाटन

■ **रायपुर।** सकल जैन समाज के भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति का प्रधान कार्यालय का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से संस्कारक अनिल दुगड़ व सूर्यप्रकाश बैद द्वारा संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपादित करवाया। समारोह में विशेष रूप से रायपुर पश्चिम विधायक राजेश मूणत के साथ तेयुप के पदाधिकारी व समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कलेक्शन सेंटर उद्घाटन

■ **पूर्वांचल-कोलकाता।** पूर्वांचल-कोलकाता की के एटीडीसी प्रथम कलेक्शन सेंटर का उद्घाटन जैन संस्कार विधि द्वारा एटीडीसी कलेक्शन सेंटर नागरबाजार, कोलकाता में संस्कारक अनूप गंग द्वारा पूरे विधि-विधानपूर्वक संपादित करवाया गया।

पंचदिवसीय वीतराग पथ कार्यशाला

यशवंतपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में 'वीतराग पथ कार्यशाला' का पंचदिवसीय आयोजन तेरापंथ भवन, यशवंतपुर में साध्वी लावण्यश्री जी ठाणा ३ के सानिध्य में तेयुप यशवंतपुर द्वारा किया गया।

प्रथम दिवस पर 'ज्ञानाचार' के संबंध में साध्वी वृंद ने ज्ञानार्जन के महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी दी और तत्त्वज्ञान से अवगत करवाया। ज्ञान के महत्व को समझाते हुए साध्वीश्री ने कहा कि हमारा लक्ष्य केवल ज्ञान प्राप्ति का होना चाहिए।

द्वितीय दिवस 'दर्शनाचार' विषय पर आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने दर्शन के अतिचारों को समझाया। उन्होंने कहा कि श्रावक पहले स्वयं अपने आप का दर्शन करे। नंदन मणिहारे के दृष्टांत के माध्यम से साध्वी श्री ने समझाया कि मिथ्यात्व के कारण किस तरह मनुष्य उच्च गति से नीच गति को प्राप्त करता है।

तृतीय दिवस में 'चारित्राचार' के बारे में बताते हुए साध्वीश्री ने कहा कि श्रावक अगर जागरूक रहे तो अनावश्यक हिंसा से बच सकता है। चारित्र के कई अर्थ हो सकते हैं जिसमें एक अर्थ संयम है। भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन मे बताया है कि दर्शन संपन्नता से जीव सम्यक्त्व को प्राप्त करता है।

सम्यक्त्वी जीव आरोहण करता है इसके विपरीत मिथ्यात्वी अवरोहण को प्राप्त होता है।

सम्यक्त्वी जीव आरोहण करता है इसके विपरीत मिथ्यात्वी अवरोहण को प्राप्त होता है। चतुर्थ दिवस पर 'तपाचार' के संदर्भ में साध्वीश्री ने छोटे-मोटे तप करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि छोटे-छोटे नियम या छोटे-छोटे तप से भी कर्मनिर्जरा हो सकती है। उन्होंने बताया कि भगवान महावीर जब तप करते थे तो अधिकांश समय ध्यान में रहते थे। पंचम और अंतिम दिन 'वीर्याचार' विषय पर आयोजित किया गया।

पाँचों दिवस तेरापंथ युवक परिषद के सदस्य और संपूर्ण श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ सभा के सदस्यों का भी संपूर्ण सहयोग रहा। प्रथम दिवस तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष जिगर मारू ने सब का स्वागत किया। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई।

अंतिम दिन तेरापंथ सभा के अध्यक्ष गौतम मुथा, मंत्री महावीर ओसवाल, गांधीनगर सभा ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश बाबेल, महिला मंडल अध्यक्षा मीना दक, अभातेयुप से विनोद मुथा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ युवक परिषद यशवंतपुर के मंत्री महावीर गन्ना ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

संबोधि

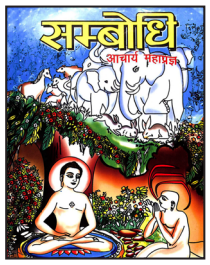

साध्य-साधन-संज्ञान

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

आत्मा का शुद्ध स्वरूप उपादेय है। वही साध्य है। वह कैसे प्राप्त होता है, इसकी विधि का नाम साधना है। साधना को एक शब्द में बांधा जाए तो वह है संयम। संयम का अधिकारी वही होता है, जो संदेह के वातावरण में सांस नहीं लेता। साध्य की प्राप्ति में इंद्रिय, मन और शरीर बाधक होते हैं। आत्मा के साथ इनका गहरा संपर्क है। ये आत्मा को अपने जाल में यदा-कदा फंसाते ही रहते हैं। अबुद्ध आत्मा इस जाल से मुक्त नहीं हो सकती। प्रबुद्ध आत्मा मन आदि के घेरे में नहीं आती। यदि मोहवश उनका शिकार हो जाती है तो वह तत्क्षण उनसे मुक्त होने का प्रयत्न करती है। उसे अपने स्वरूप का ज्ञान होता है। उसे यह ज्ञात है कि बंधन के स्रोत कहां-कहां हैं। जिसे बंधन के मार्गों का अवबोध नहीं है वह प्रतिक्षण उनका संग्रह करता रहता है। एक के बाद दूसरी बंधन की श्रृंखला जुड़ती चली जाती है। इसलिए साध्य, साधन और उसके ज्ञान की ज्ञप्ति अत्यंत आवश्यक है। इस अध्याय में इन्हीं का विशद विवेचन है।

मेघः प्राह

१- किं साध्यं? साधनं किञ्च? केन तन्नाम साध्यते ?
साध्यसाधनसंज्ञाने, जिज्ञासा मम वर्तते ॥

मेघ बोला- भगवन्! साध्य क्या है? साधन क्या है? साध्य की साधना कौन करता है? मैं साध्य और साधन के विषय को जानना चाहता हूं।

भगवान् प्राह

२- प्रश्नो वत्स! दुरूहोऽयं, नानात्वेन विभज्यते ।
नानारुचिरयं लोको, नानात्वं प्रतिपद्यते ॥

भगवान् ने कहा- वत्स! यह प्रश्न दुरूह है। यह अनेक प्रकार से विभक्त होता है। लोग भिन्न-भिन्न रुचिवाले होते हैं, अतः साध्य भी अनेक हो जाते हैं।

मार्ग विविध हैं और उनके प्रवर्तक भी विविध हैं। जीवन का लक्ष्य एक होते हुए भी प्रवर्तकों की दृष्टि से उसमें भिन्नता आ जाती है। कुछ व्यक्ति आस्थावान होते हैं और कुछ अनास्थावान। कुछ ज्ञानवादी होते हैं पर आचारवान नहीं। कुछ आचार पर बल देते हैं तो ज्ञान पर नहीं। कुछ मोक्ष, स्वर्ग और नरक को केवल धार्मिकों की कल्पना मात्र कहकर उसका मखौल उड़ाते हैं। कुछ '**अस्ति चेन् नास्तिको हतः**' कहते हैं। यदि मोक्ष आदि है तो बेचारे नास्तिक का क्या होगा? आत्मा को न मानने वाले कर्म का फल भी नहीं मानते हैं। अतः उनका विश्वास हिंसा में होता है। कुछ आत्मा को मोक्ष में जड़ मानते हैं। जितने वाद हैं उनकी पृष्ठभूमि में विविधता भरी है। दार्शनिकों के मतवादों से मनुष्य अनेक मान्यताओं में विभक्त है। इसलिए उनका साध्य भी एक नहीं है। साध्य की अनेकता में साधनों की अनेकता भी अखरने वाली नहीं है।

साध्य और साधन के स्पष्ट विवेक में अनेकता एकता का वरण कर लेती है। वहां सत्य का आग्रह होता है, मिथ्या का नहीं। सत्याग्रही असंदिग्ध होता है। साधक के लिए दृढ़ आस्थावान होना आवश्यक है। संदिग्ध व्यक्ति साध्य का साक्षात्कार नहीं कर सकता।

३- विद्यते नाम लोकोऽयं, न वा लोकोऽपि विद्यते ।
एवं संशयमापन्नः, साध्यं प्रति न धावति ॥

लोक है या नहीं - इस प्रकार संदिग्ध रहने वाला व्यक्ति साध्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न नहीं करता।

४- विद्यते नाम जीवोऽयं, न वा जीवोऽपि विद्यते ।
एवं संशयमापन्नः, साध्यं प्रति न धावति ॥

जीव है या नहीं - इस प्रकार संदिग्ध रहने वाला व्यक्ति साध्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न नहीं करता ।

५- विद्यते नाम कर्मेदं, न वा कर्मापि विद्यते ।
एवं संशयमापन्नः, साध्यं प्रति न धावति ॥

कर्म है या नहीं - इस प्रकार संदिग्ध रहने वाला व्यक्ति साध्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न नहीं करता।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

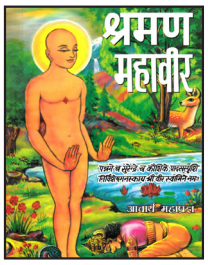

स्वतन्त्रता का अभियान

राजकुमार का मन उत्पीड़ित हो उठा। वे उद्यान-क्रीडा को गए बिना ही वापस मुड़ गए। अब उनके मस्तिष्क में ये दो प्रश्न बार-बार उभरने लगे यह कैसा शासन, जो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य को खरीदने का अधिकार दे।

यह कैसा शासन, जो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य को मारने का अधिकार दे? उनका मन शासन के प्रति विद्रोह कर उठा। उनका मन ऐसा जीवन जीने के लिए तड़प उठा, जहां शासन न हो।

महावीर को बचपन से ही सहज सन्मति प्राप्त थी। निमित्त का योग पाकर उनकी सन्मति और अधिक प्रबुद्ध हो गई। उन्होंने शासन की परम्पराओं और विधि-विधानों से दूर रहकर अकेले में जीवन जीने का निश्चय कर लिया।

वर्द्धमान शासन-मुक्त जीवन जीने की तैयारी करने लगे। नंदिवर्द्धन को इसका पता लग गया। वे वर्द्धमान के पास आकर बोले, 'भैया! इधर माता-पिता का वियोग और इधर तुम्हारा घर से अभिनिष्क्रमण! क्या मैं दोनों वज्रपातों को सह सकूंगा? क्या जले पर नमक छिड़कना तुम्हारे लिए उचित होगा? तुम ऐसा मत करो। तुम घर छोड़कर मत जाओ। यह पिता का उत्तराधिकार तुम सम्भालो। मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करने को तैयार हूं। मेरा फिर यही अनुरोध है कि तुम घर छोड़कर मत जाओ।'

'भैया! मुझे शासन के प्रति कोई आकर्षण नहीं है। जिस शासन में मानव की दुर्दशा के लिए अवकाश है, वह मेरे लिए कथमपि आदेय नहीं हो सकता। मेरा तन स्वतंत्रता के लिए तड़प रहा है। आप मुझे आज्ञा दें, जिससे मैं अपने ध्येय-पथ पर आगे बढ़ूं।

'भैया! तुम्हें लगता है कि शासन में खामियां हैं। वह मनुष्य को मर्यादाशील नहीं बनाता, किन्तु उसकी परतंत्रता की पकड़ को मजबूत करता है तो उसे स्वस्थ बनाने के लिए तुम शासन में क्यों नहीं आते हो?'

'भैया! हम गणतंत्र के शासक हैं। गणतंत्रीय शासन पद्धति में हमें सबक मतों का सम्मान करना होता है। उसमें अकेला व्यक्ति जैसा चाहे, वैसे परिवर्तन कैसे ला सकता है? मैं पहले अपने अन्तःकरण में परिवर्तन लाऊंगा। उस प्रयोग के सफल होने पर फिर मैं उसे सामाजिक स्तर पर लाने का प्रयत्न करूंगा।'

'भैया! तुम कहते हो, वह ठीक है। मैं तुम्हारे इस महान् उद्देश्य की पूर्ति में बाधक नहीं बनूंगा। पर इस समय तुम्हारा घर से अभिनिष्क्रमण क्या उचित होगा? क्या मैं इस आरोप से मुक्त रह सकूंगा कि माता-पिता के दिवंगत होते ही बड़े भाई ने छोटे भाई को घर से बाहर निकाल दिया?'

नंदिवर्द्धन का तर्क भी बलवान था और उससे भी बलवान थी उसके हृदय की भावना। महावीर का करुणार्द्र हृदय उसका अतिक्रमण नहीं कर सका।

दिन भर की थकान के बाद सूर्य अपनी रश्मियों को समेट रहा था। चरवाहे जंगल में स्वच्छन्द घूमती गायों को एकत्र कर गांव में लौट रहे थे। दुकानदार दुकानों में बिखरी हुई वस्तुओं को समेट कर भीतर रख रहे थे। सूर्य की रश्मियों के फैलाव के साथ न जाने कितनी वस्तुएं फैलती हैं और उनके सिमटने के साथ वे सिमट जाती हैं। सुपार्श्व और नंदिवर्द्धन के साथ बिखरी हुई कुमार वर्द्धमान की बात अभी सिमट नहीं पा रही थी।

मधुकर पुष्प-पराग का स्पर्श पाकर ही सन्तुष्ट नहीं होता, वह उससे मधु प्राप्त कर सन्तुष्ट होता है। सुपार्श्व और नंदिवर्द्धन दोनों अपने-अपने असन्तोष का आदान- प्रादान कर रहे थे। उन्हें कुमार वर्द्धमान से सन्तोष देने वाला मधु अभी मिला नहीं था।

कुमार वर्द्धमान अपने लक्ष्य पर अडिग थे, साथ-साथ अपने चाचा और भाई की वेदना से द्रवित भी थे। वे उन्हें प्रसन्न कर अभिनिष्क्रमण करना चाहते थे। उनकी करुणा और अहिंसा में प्रकृति सौकुमार्य का तत्त्व बहुत प्रबल था।

कुमार अपनी बात को समेटने के लिए नंदिवर्द्धन के कक्ष में आए। चाचा और भाई को मंत्रणा करते देख प्रफुल्ल हो उठे। उनकी मंत्रणा का विषय मेरा अभिनिष्क्रमण ही है, यह समझते उन्हें देर नहीं लगी। वे दोनों को प्रणाम कर उनके पास बैठ गए।

सुपार्श्व ने वर्द्धमान के अभिनिष्क्रमण की बात छेड़ दी। नंदिवर्द्धन ने कहा, 'चुल्लपिता! यह अकांड वज्रपात है। इसे हम सहन नहीं कर सकते। कुमार को अपना निर्णय बदलना होगा। मैं पहले ही कुमार से यह चर्चा कर चुका हूं। आज हम दोनों बैठे हैं। मैं चाहता हूं, अभी इस बात का अन्तिम निर्णय हो जाए।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

सत्य शोध का यात्रा पथ

(पिछला शेष)

सम्यक् दृष्टि - सातिशय मिथ्यादृष्टि से असंख्य गुण अधिक निर्जरा।

देशविरत - सम्यग्दृष्टि से असंख्य गुण अधिक निर्जरा।

सर्वविरत - देशविरत से असंख्य गुण अधिक निर्जरा।

अनन्त वियोजक - सर्वविरत से असंख्य गुण अधिक निर्जरा।

दर्शन मोहक्षपक - अनन्त वियोजक से असंख्य गुण अधिक निर्जरा।

उपशमक - दर्शन मोहक्षपक से असंख्य गुण अधिक निर्जरा।

उपशान्तमोह - उपशमक से असंख्य गुण - अधिक निर्जरा।

क्षपक - उपशांतमोह से असंख्य गुण अधिक निर्जरा।

क्षीण मोह- क्षपक से असंख्य गुण अधिक निर्जरा।

जिन - क्षीणमोह से असंख्य गुण अधिक निर्जरा।

सातिशय मिथ्यादृष्टि - अपूर्वकरण के अन्तिम समय में विद्यमान विशुद्ध मिथ्यादृष्टि।

अनन्त वियोजक - श्रेणी-आरोहण के लिए सम्मुख सम्यग दृष्टि वाला जीव जो अनन्तानुबन्धी कषाय को अप्रत्याख्यानावण अथवा प्रत्याख्यानावरण अथवा संज्वलनरूप परिणत कर देता है। इसी क्रिया को अनन्तानुबन्धी वियोजन कहते हैं।

दर्शनमोहक्षपक - जो दर्शनमोहनीय कर्म का क्षय कर क्षायिक सम्यक्त्व को प्राप्त हो चुका है।

मोहोपशमक - उपशम श्रेणी के आठवें, नौवें, दसवें गुणस्थान वाले जीव।

उपशांतमोह - ग्यारहवें गुणस्थान वाला जीव।

मोहक्षपक - क्षपकश्रेणी के आठवें, नवें, दसवें गुणस्थान वाला जीव।

क्षीणमोह - बारहवें गुणस्थान वाला जीव।

जिन- तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान वाले जीव।

शुभयोग अथवा तपोयोग से निर्जरा के साथ पुण्य का बन्ध भी होता है। पर उद्देश्य आत्मशुद्धि का ही होना चाहिए, पुण्य बन्ध का नहीं।

आचार्य भिक्षु ने प्रेरणा के स्वर में कहा है–
वंछा कीजै एक मुगत री, और वंछा न कीजे लिगार।
जे पुन तणी वंछा करे, ते गया जमारो हार।।

एक मुक्ति की ही कामना करनी चाहिए। तपस्या में पुण्य (भौतिक सुखों) की कामना नहीं करनी चाहिए। जो पुण्य की वांछा करते हैं वे अमूल्य अवसर को खो देते हैं।

७. सत्य शोध का यात्रा पथ

गन्तव्य की प्राप्ति से पूर्व उसका निर्धारण आवश्यक है। मार्ग लम्बा हो या छोटा, उसका सही ज्ञान और समुचित गतिशीलता गन्ता को गन्तव्य से मिला देती है। गतिशीलता का महत्त्व है परन्तु वह गन्तव्य पर आधारित है। यदि हमारा गन्तव्य/लक्ष्य महत्त्वपूर्ण है तो गतिशीलता भी महत्त्वपूर्ण है। लक्ष्य-निर्धारण हो जाने के बाद भी आलस्य और प्रमाद व्यक्ति को गतिशील और क्रियाशील नहीं बनने देता। समीचीन पुरुषार्थ हो तो गन्तव्य निकट होता चला जाता है।

सीता का हरण हो गया था। उसकी खोज की प्रक्रिया चल रही थी। विद्याधर रत्नजटी के माध्यम से यह पता राम को हो गया था कि सीता का हरण रावण ने किया है। राम के सामने अब लंका से सीता की प्राप्ति का लक्ष्य था। उन्होंने सुग्रीव से पूछा- सुग्रीवजी! यहां से लंका कितनी दूर है? सुग्रीवजी ने पौरुषवर्धक उत्तर दिया- 'महाराज! आलसी लोगों के लिए बहुत दूर है और पुरुषार्थी के लिए बिल्कुल निकट है।' इस संवाद को जैन रामायण में एक पद्य में प्रस्तुत किया गया है-

राम पुछै सुग्रीव नै, लंका केती दूर।
आलसियां अलगी घणी, उद्यमवंत हुजूर ।।

मार्ग में गत्यवरोध भी आ सकते हैं। उन्हें उत्साह और साहस के साथ पार करना होता है। कहीं अपमान मिलता है, कहीं निराशा का कुहासा सामने आता है, कहीं असफलता सहचरी के रूप में दिखाई देती है, इन स्थितियों का सम्यक् विश्लेषण इनसे मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। उसके अभाव में, तात्कालिक आवेश और असुविचारित साहसिक निर्णय व्यक्ति को बहुत पीछे भी ढकेल सकता है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री भारीमालजी युग

मुनिश्री भीमजी (रोयट) दीक्षा क्रमांक : ६२

मुनिश्री बड़े तपस्वी संत थे। आपने उपवास, बेले, तेले, चोले अनेक बार किये। उससे ऊपर आपने ५ दो बार, ८ दो बार, १२ एक बार, १५ एक बार, ३० एक बार किए। मुनिश्री शीतकाल में सिर्फ एक पछेवड़ी ओढ़कर शीत सहन करते। ग्रीष्मकाल में आतापना लेते। आपके प्रतिदिन दो विगय के अतिरिक्त खाने का त्याग था।

- साभारः शासन समुद्र -

मार्च 2024
सप्ताह के विशेष दिन

20 मार्च
आचार्य श्री माणकलाल जी दीक्षा दिवस

21 मार्च
भगवान मल्लिनाथ निर्वाण एवं भगवान मुनिसुव्रत दीक्षा कल्याणक

24 मार्च
होलिका

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है। माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां आत्मशुद्धि है, विश्वास भी है।

-आचार्य श्री महाश्रमण

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

चाकरी सफलतापूर्वक हुई संपन्न

मंगलभावना समारोह का आयोजन

गंगाशहर।

तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी व साध्वी ललितकला जी की एक वर्ष की चाकरी की सफलतापूर्वक परिसंपन्नता पर उनके विहार से पूर्व विदाई समारोह को मंगलभावना समारोह के रूप में मनाया गया। शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी ने कहा कि गुरुदेव की कृपा से गंगाशहर सेवा केंद्र की चाकरी सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

साध्वी ललितकला जी एवं सभी सहवर्ती साध्वियों का अपार सहयोग प्राप्त हुआ। गंगाशहर की तेरापंथी सभा सहित सभी संस्थाओं, यहाँ के श्रावक-श्राविकाओं, चिकित्सकों आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। माईतो का वात्सल्य, अपनत्व व आशीर्वाद प्राप्त हुआ। साध्वी ललितकला जी ने कहा कि सर्वप्रथम गंगाशहर की सभी श्रावक-श्राविकाओं के प्रति साधुवाद व्यक्त करते है। उन्होंने सभी सहवर्ती साध्वियों के सहयोग की सराहना की तथा सभी सेवाग्राही साध्वियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि आपने गजब की चाकरी की है। माईतों व सभी लोगों ने आपके प्रति अहोभाव व्यक्त किया। साध्वी कांतश्री जी, साध्वी प्रभाश्री जी, साध्वी मल्लिकाश्री जी, समणी निर्वाणप्रज्ञा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। सेवाग्राही वृद्ध साध्वियों ने सामूहिक गीतिका का संगान किया।

महिला मंडल व नव आगंतुक साध्वियों की तरफ से गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण से किया गया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेरापंथ न्यास के ट्रस्टी जैन लूणकरण छाजेड़, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के मंत्री दीपक आंचलिया, महिला मंडल अध्यक्षा अंजू लालाणी, तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा सहित अनेक गणमान्यजनों ने अपनी मंगलभावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के कोषाध्यक्ष जतन संचेती द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन सभा के सहमंत्री पवन छाजेड़ ने किया।

समारोह के उपरांत शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी, साध्वी ललितकला जी सहित ९ साध्वियों ने शांतिनिकेतन से मंगल विहार किया। विहार में तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल के कार्यकर्ताओं सहित श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।

नवीन मशीनरी का हुआ लोकार्पण

बेंगलुरु।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, राजाजीनगर में नवीन मशीनरी का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। तेयुप के अध्यक्ष रजत बैद ने उपस्थित सभी का स्वागत करते हुए परिषद की गतिविधियों की जानकारी दी। पूर्व अध्यक्षों, संयोजकों एवं दानदाताओं के सहयोग को याद किया गया।

संयोजक विनय बैद ने एटीडीसी द्वारा मानव सेवा के क्षेत्र में दिए जा रहे योगदान की जानकारी देते हुए प्रायोजक परिवार का परिचय प्रस्तुत किया।

संभाग प्रमुख अमित दक ने कहा कि तेयुप, बेंगलुरु हमेशा से सेवा, संस्कार एवं संगठन के क्षेत्र में गतिमान रही है नवीन मशीनरी का लोकार्पण और समय-समय पर नए-नए कार्य करती रहती है। प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोकरणा ने शुभकामनाएँ दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने कहा कि तेयुप, बेंगलुरु निरंतर प्रगति पर आगे बढ़ रही है। समय की माँग को देखते हुए अब इस डायग्नोस्टिक सेंटर में संपूर्ण मास्टर हेल्थ चेकअप की स्वयं सुविधा हो चुकी है।

जैन संस्कार विधि से राष्ट्रीय सहप्रभारी विकास बांठिया एवं परिषद के संस्कारक अमित भंडारी ने परिषद के जैन संस्कार विधि के कार्यक्रम में विधि-विधान से नवीन मशीनरी का लोकार्पण करवाया। प्रायोजक प्रकाश कुंडलिया, डॉ0 अरिहंत भंडारी एवं कमलेश डूंगरवाल ने अपनी शुभकामनाएं संप्रेषित की।

नि:शुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप शिविर का आयोजन

राजाजीनगर।

तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम द्वारा नि:शुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप परीक्षण शिविर का समायोजन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ महिला शाखा के गायत्रीनगर कार्यालय 'सुकृपा' में आयोजित किया गया। शिविर की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से की गई। सभी सदस्यों का रैंडम ब्लड शुगर लेवल ग्लूकोमीटर के माध्यम से एवं रक्त चाप परीक्षण किया गया।

इस शिविर से कुल ७६ लोग लाभान्वित हुए। तेयुप राजाजीनगर सदस्यों ने स्थानीय लोगों से वार्तालाप करते हुए सभी को एटीडीसी श्रीरामपुरम द्वारा प्रदत्त विभिन्न चिकित्सा सम्बंधित सेवायें, डॉक्टरों की उपलब्धता एवं अन्य जानकारी से अवगत करवाया। आरएसएस सुब्रमण्यनगर वार्ड की महिला प्रमुख मधु ने परिषद परिवार को धन्यवाद व्यक्त करते हुए आगे भी सहयोग हेतु निवेदन किया।

तेयुप से कमलेश चौरड़िया, सुनील मेहता, दीपक गिलुण्डिया, अभिषेक पीपाड़ा एवं रवि चौधरी ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा

वर्ष २०२४ हेतु नवीन घोषित चातुर्मास

मुनि रमेशकुमार जी : काठमांडू, नेपाल
साध्वी लब्धियशा जी : राजनगर, मेवाड़
साध्वी यशोधरा जी : मॉडल टाउन, हिसार
साध्वी संगीतश्री जी : शाहदरा, दिल्ली
साध्वी कमलप्रभा जी 'बोरज' : छोटी खाटू
साध्वी रामकुमारी जी (सरदारशहर) : कांकरिया-मणिनगर
साध्वी शुभप्रभा जी : सरदारशहर
साध्वी पुण्यप्रभा जी : रतलाम
साध्वी कंचनप्रभा जी : इचलकरंजी
साध्वी सरस्वतीश्री जी : शाहीबाग, अहमदाबाद
साध्वी परमप्रभा जी : कांकरोली
साध्वी मंजूप्रभा जी : तुलसी साधना केंद्र, बीकानेर
साध्वी पंकजश्री जी : वड़ोदरा
साध्वी समन्वयप्रभा जी : टोहाना, हरियाणा
साध्वी गुप्तिप्रभा जी : बोरावड़

अभिवंदना के स्वरों में एक स्वर आपका भी

युगप्रधान शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर करें अपने लेखन से अभिवंदना

परम पूज्य युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के

५०वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता, ६३वें जन्म दिवस, १५वें पदाभिषेक दिवस

के उपलक्ष में वंदनीय चारित्रात्माओं एवं पाठक गणों की स्वरचित रचनाएं सादर आमंत्रित है।

- आप अपनी रचना आलेख (अधिकतम ३०० शब्द) / कविता (अधिकतम १५ पंक्ति) / गीत (अधिकतम ५ पद्य/१५ पंक्ति) / स्केच के रुप में भिजवा सकते हैं।
- कृपया एक व्यक्ति एक ही रचना भिजवाए।
- आप अपनी रचना टाइप करवा कर या पीडीएफ फॉर्मेट में १५ **अप्रैल** २०२४ तक **abtyptt@gmail.com** पर ईमेल करवा सकते हैं।
- प्रकाशन का सर्वाधिकार संपादक के पास सुरक्षित रहेगा।

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

कैंसर जागरूकता कार्यशाला के विविध आयोजन

शुद्ध व सही खान-पान से स्वस्थ शरीर का होता है।

सरदारपुरा, जोधपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित कैंसर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन संचेती अस्पताल एवं कैंसर इंस्टीट्यूट में आयोजित किया गया। कैंसर स्पेशलिस्ट डॉक्टर सुरेश संचेती एवं गाइनेकोलॉजिस्ट डॉक्टर अमिता संचेती के मार्गदर्शन में इस कैंप का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से गई, तत्पश्चात महिला मंडल की बहिनों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्षा दिलखुश तातेड़ ने सबका हार्दिक स्वागत किया। सुशीला भंसाली व दिलखुश तातेड़ ने साहित्य के द्वारा दोनों डॉक्टरों को सम्मानित किया।

डॉ अमिता संचेती ने बताया कि हम नियमित चेकअप के द्वारा कैंसर से बच सकते हैं। अब महिलाएं सफाई का ध्यान रखने लगी है। डॉ.सुरेश संचेती ने बताया कि हमारे अस्वस्थ खानपान व अस्वस्थ दिनचर्या से ही कैंसर होता है। कैंसर कई प्रकार के होते हैं जैसे ब्रेस्ट कैंसर, स्किन कैंसर, फेफड़े का कैंसर, लिंफोमा सहित २०० से अधिक प्रकार के कैंसर होते हैं। इन सभी कैंसर के लक्षण और जांच एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

कैंसर के कुछ मुख्य लक्षण इस प्रकार है, जिनका हमें विशेष ध्यान रखना चाहिए जैसे अचानक वजन कम या ज्यादा होना, अत्यधिक थकान, कोई भी बीमारी लंबे समय तक रहना, त्वचा में बदलाव, तेज दर्द आदि। ४० वर्ष की आयु के बाद हर वर्ष हमें हेल्थ चेकअप करवाते रहना चाहिए और हमारा खान-पान स्वस्थ होना चाहिए। हमारी जीवन शैली और हमारे खानपान में परिवर्तन करके, अपनी दिनचर्या के साथ ही योग और व्यायाम को जोड़ें, जिससे हम अपने आपको स्वस्थ रख सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर प्रियंका बैद ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष अमिता बैद ने किया।

आर.आर नगर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित कैंसर अवेयरनेस प्रोग्राम का आयोजन किया गया। अध्यक्ष सुमन पटावरी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का आगाज किया। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों द्वारा सुमधुर मंगलाचरण हुआ। अध्यक्ष ने अपने वक्तव्य में कहा कि कैंसर जैसी घातक बीमारी के प्रति जागरूक रहना है, डरना नहीं, लड़ना है। संगीता मेहता ने डॉक्टर का परिचय देते हुए कार्यशाला की भूमिका बांधी। डॉ. अनिल मेहता, डॉ. शंकरी एम. ने प्रोजेक्टर के माध्यम से ब्रेस्ट कैंसर एवं सर्वाइकल कैंसर के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए पाए जाने वाले लक्षण, वैक्सीन आदि पर चर्चा की। उन्होंने कैंसर के कारण एवं बचाव की जानकारी देते हुए नियमित जांच को महत्वपूर्ण बताया।

इस घातक बीमारी के बारे में फैली भ्रांतियों को दूर किया। उन्होंने कहा कि हर एक ज़िम्मेदार नागरिक इस ओर जागरूक रहे तो हम एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकते हैं। आभार ज्ञापन सहमंत्री वंदना भंसाली द्वारा किया गया। आगंतुक सभी डॉक्टरों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री पदमा मेहर एवं सह मंत्री वंदना भंसाली ने किया।

तिरूपुर

अखिल भारतीय महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल तिरुपुर द्वारा 'कैंसर अवेयरनेस' सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र व बहिनों द्वारा प्रेरणा गीत के संगान के साथ किया गया। अध्यक्षा नीता सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। अभातेममं सदस्या अनीता बरडिया ने कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ. रेखा रामकुमार का परिचय दिया। डॉ. रामकुमार ने कहा कि प्रत्येक बहिन को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बरतनी चाहिए। हमारी थोड़ी सी लापरवाही हमें बड़ी सजा दे सकती है। सर्वाइकल कैंसर के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए उन्होंने सभी बहिनों से आग्रह किया कि २ साल के अंतराल से इसका टेस्ट करवाना चाहिए तथा टीनएजर लड़कियों को वैक्सीन अवश्य लगवाना चाहिए। डॉक्टर द्वारा सभी बहिनों की जिज्ञासाओं का समाधान दिया गया। प्रीति भंडारी ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सह मंत्री श्वेता कोठारी ने किया।

बीदासर।

समाधि केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशा जी के सान्निध्य में 'कैंसर जागरूकता अभियान' व 'मिलेट्स का उपयोग' एवं घरेलू नुस्खों द्वारा बीमारियों से बचाव कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई जिसमें मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। मुख्य वक्ता महिला म ंडल के विविध आयोजन डॉ0 सारिका गिड़िया ने बताया कि कैसे जागरूक रहकर योग, ध्यान, व्यायाम करके एवं घरेलू नुस्खों द्वारा बीमारियों से लड़ा जा सकता है। पैकेट के खाने का सेवन बंद हो और शुद्ध खान-पान द्वारा स्वस्थ रहा जा सकता है। उन्होंने आगे बताया कि मिलेट्स का उपयोग कितना जरूरी है। किस मात्रा में कितना, कब व कैसे खाना यह भी बताया। कैंसर जैसीमहामारी से कैसे व किन उपायों द्वारा बचा जा सकता है, इस पर भी जानकारी दी गई।

शासनश्री साध्वी अमितप्रभा जी ने बताया कि भगवान महावीर कितने बड़े वैज्ञानिक थे, जिन्होंने हजारों वर्ष पहले बता दिया था कि स्वस्थ कैसे रहा जा सकता है। आहार संयम कितना आवश्यक है। जैन धर्म में सोने और जागने के भी नियम हैं, ताकि शरीर स्वस्थ बना रहे। केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशा जी ने बताया कि शरीर धर्म साधना का साधन है, इसलिए स्वस्थ शरीर का होना अति आवश्यक है ताकि धार्मिक चेतना से जुड़ाव हो। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ महिला मंडल मंत्री भावना दुगड़ ने किया।

रक्तदान शिविर के विविध आयोजन

उधना

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, उधना द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का आयोजन पाँच केंद्रों पर तेरापंथ भवन, उधना एटीडीसी भेस्तान, एटीडीसी पांडेसरा, शुभ रेजिडेंसी, समृद्धि उचवी गैस एजेंसी डिंडोली पर आयोजित हुआ। मानवता के इस कार्य में २९२ रक्तदाताओं ने भाग लिया, जिसमें १८९ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ।

वड़ोदरा

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप वड़ोदरा द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। रक्तदान शिविर में सभा, तेयुप के सदस्यों का सहयोग मिला। इस कैंप में कुल ५१ यूनिट ब्लड एकत्रित हुआ।

इसी क्रम में इंद्रप्रस्थ चेरिटेबल ट्रस्ट, एलोरा पार्क में आयोजित रक्तदान शिविर में कुल ७४ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। शिविर के आयोजन में महावीर हिरण, भैरव समदरिया, सुजल गुंडेचा, निर्भय सरिमल और हर्ष पोखरना का सहयोग प्राप्त हुआ।

सरदारपुरा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, सरदारपुरा द्वारा पार्श्वनाथ सिटी रेजिडेंट वेलफेयर सोसायटी में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। अध्यक्ष कैलाश जैन ने बताया कि इस शिविर में ५१ रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। मंत्री मिलन बांठिया और संगठन मंत्री देवीचंद तातेड़ ने पार्श्वनाथ सोसायटी के सचिव विपुल जैन और कोषाध्यक्ष धनेश सोनी को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

संक्षिप्त खबर

वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

तोशाम, हरियाणा। ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन तोशाम में किया गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से प्रारंभ हुए कार्यक्रम में बच्चों ने मंगलाचरण के रूप में ज्ञानशाला गीत का संगान किया। उपासिका मंजू जैन ने 'सबसे प्यारी सबसे सुहानी' ज्ञानशाला गीत का संगान किया एवं प्रेरणादायी वक्तव्य दिया।

ज्ञानशाला के बच्चे चेतना, कृतिका व पायल ने कविता व कहानी के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। सबसे छोटे ज्ञानार्थी हार्दिक जैन ने सामायिक पाठ सुनाया व हिमांशु जैन ने वर्णमाला गीत सुनाया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने स्वरचित गीत की मनमोहक प्रस्तुति दी। मुख्य प्रशिक्षिका कमलेश जैन ने सभी को बताया कि परम पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से एवं केंद्र के निर्देशन में तोशाम क्षेत्र में वर्ष २००३ से निरंतर ज्ञानशाला का संचालन किया जाता है। प्रशिक्षिका ज्योति जैन ने शिशु संस्कार बोध की वार्षिक परीक्षा का रिजल्ट सुनाया एवं कमलेश जैन ने पूरे वर्ष की गतिविधि की रिपोर्ट प्रस्तुत की। कार्यक्रम में सभी ज्ञानार्थियों को पुरस्कार देते हुए सभी प्रशिक्षिकाओं को सम्मानित किया गया। आभार ज्ञापन ज्योति जैन ने किया।

मानव सेवा कार्य

राजाजीनगर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के त्रि-आयामी सूत्र सेवा-संस्कार-संगठन के क्षेत्र को गति प्रदान करते हुए तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा राममूर्तिनगर स्थित 'विश्व सांई चैरिटेबल ट्रस्ट' में दैनिक उपयोगी सामग्री प्रदान कर सेवा कार्य को संपादित किया गया। ट्रस्ट केयरटेकर अक्षय ने ट्रस्ट की जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि यह ट्रस्ट पिछले २४ साल से चल रहा है। यहां पर लगभग २२ वृद्धों की देखभाल की जाती है।

महाप्रज्ञ सभागार में अणुव्रत काव्यधारा का हुआ सफल आयोजन

जयपुर।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के संदर्भ में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर निर्देशित अणुव्रत काव्यधारा कार्यक्रम 'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में अणुविभा जयपुर केन्द्र के महाप्रज्ञ सभागार में आयोजित किया गया।

काव्यधारा का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल जयपुर एवं तेरापंथ महिला मंडल सी स्कीम की बहिनों द्वारा प्रस्तुत अणुव्रत गीत के मंगल संगान से हुआ।

कार्यक्रम में प्रसिद्ध कवि डॉ. क्षिप्रा नत्थानी, सोनू यशराज, अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित योगाचार्य डॉ. नरेंद्र शर्मा 'कुसुम' एवं इकराम राजस्थानी की भी उपिस्थित रही। कार्यक्रम में जसबीर सिंह, पूर्व अध्यक्ष, अल्पसंख्यक आयोग, राजस्थान सरकार, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हिम्मत डोसी, अणुविभा जयपुर न्यास के अध्यक्ष एवं जय तुलसी फाऊंडेशन के प्रधान न्यासी पन्नालाल बैद, अणुव्रत समिति जयपुर के पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। अणुव्रत समिति जयपुर के अध्यक्ष विमल गोलछा ने समागत कवियों एवं अतिथिजनों का स्वागत एवं अभिनन्दन किया तथा अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया। अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के दौरान स्थानीय अणुव्रत समिति द्वारा किए गए विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी भी दी गई।

अणुव्रत व्यक्ति की दायित्व चेतना, विवेक बुद्धि एवं नियंत्रण की शक्ति जगाता है।

कार्यक्रम में कवियत्री सोनू यशराज ने कविता के माध्यम से मानवीय एकता की बात कही। साध्वी समितिप्रभा जी ने साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी की रचना पर काव्य पाठ किया। योगाचार्य डॉ. नरेंद्र शर्मा 'कुसुम' ने चुनाव शुद्धि विषय पर काव्य पाठ कर आह्लादित किया। साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने व्यसनमुक्त जीवन पर अपनी कविता प्रस्तुत की।

प्रसिद्ध कवि इकराम राजस्थानी ने अणुव्रत पर एक से एक बढ़कर मुक्तक सुनाए। शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी ने अपने उद्बोधन में सभी कवियों द्वारा प्रवाहित काव्यधारा की अनुशंसा करते हुए अणुव्रत की वर्तमान जीवन में प्रासंगिकता को समझाया।

उन्होंने कहा- अणुव्रत व्यक्ति की दायित्व चेतना, विवेक बुद्धि एवं नियंत्रण की शक्ति जगाता है। अणुव्रत के बिना लाइट और ब्रेक विहीन समाज की गाड़ी का भविष्य क्या होगा? कार्यक्रम का सफल संयोजन समिति मंत्री डॉ. जयश्री सिद्ध एवं सौरभ जैन ने किया। अणुव्रत समिति के कार्यसमिति सदस्य सुरेश बरड़िया ने आभार ज्ञापन किया।

जैनम् जयतु शासनम्, नारा नहीं, लक्ष्य बने

वेल्लूर, तमिलनाडु।

तमिलनाडु के वेल्लूर शहर के जैन स्थानक में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में "जैनम् जयतु शासनम्" विषयक कार्यशाला का आयोजन स्थानकवासी जैन संघ द्वारा किया गया। मुनि दीपकुमार जी ने कहा- जैन धर्म में स्थान-स्थान पर 'जैनम् जयतु शासनम्' की ध्वनि उठती है, नारे भी लगते हैं, पर इतने मात्र से हम कृत-कृत्य नहीं हो जाते। हमारा लक्ष्य बने अगर हम वास्तव में जिन शासन की विजय चाहते हैं तो हमें सक्रिय योगदान करना पड़ेगा। यह एक यथार्थ है कि किसी भी चीज की तेजस्विता बलिदान से प्रकट होती है। जैन धर्म के प्रति आकर्षण तभी बढ़ेगा, जब जैनों के जीवन में सच्चा जैनत्व आएगा। आज जैनी कहलाने वाले बहुत हैं, पर जैनत्व का मर्म समझने वाले बहुत ही कम हैं। जैनत्व के संस्कार मजबूत हों, इसके लिए कुछ नए प्रयोग जरूरी हैं। आज प्रचार-प्रसार का युग है तो उसमें जैन धर्म का भी व्यापक प्रचार-प्रसार जरूरी है। जैन धर्म तो वस्तुतः जन धर्म है, मानव धर्म है। मुनिश्री ने आगे कहा- जैन धर्म की विजय पताका लहराए इसके लिए जैन संप्रदायों में एकता बहुत जरूरी है। आचार्यश्री तुलसी ने इस दिशा में भारी पुरुषार्थ किया था। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी भी "जैनम् जयतु शासनम्" मंच के माध्यम से जैन एकता की ओर बल दे रहे हैं। यह वर्ष जैन धर्म के लिए महत्वपूर्ण है। भगवान महावीर का 2550वां निर्वाण कल्याणक वर्ष है। इसमें जैन समाज की जागरूकता अपेक्षित है। मुनि काव्यकुमार जी ने आचार्य तुलसी द्वारा निर्मित गीत "जय महावीर भगवान" का संगान किया।

समाधि केंद्र में हुआ व्यवस्थापिका साध्वियों का स्वागत

बीदासर।

समाधि केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में नवागंतुक समाधि केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशा जी के स्वागत कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

साध्वी रचनाश्री जी ने इस अवसर पर सेवा का महत्त्व बताते हुए कहा कि तेरापंथ ही एकमात्र ऐसा धर्मसंघ है, जहाँ वृद्ध साधु-साध्वियों की सेवा करने के लिए पूरा साधु-साध्वी समाज तत्पर है और गुरु जिनको सेवा में नियुक्त करते हैं वे अहोभाव के साथ दायित्व स्वीकार करते हैं।

इसी क्रम में नवागंतुक समाधि केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशा जी भी दायित्व स्वीकार करने जा रही हैं। वे निर्विघ्न इस दायित्व को पूर्ण करें, यह मंगलकामना है। साध्वी कार्तिकयशा जी आदि साध्वियों ने गीत के माध्यम से चाकरी हस्तांतरण की माँग की और इधर साध्वी रचनाश्री जी आदि साध्वियों ने भी सुमधुर संगान के साथ चाकरी के दायित्व का हस्तांतरण किया।

साध्वी लब्धियशा जी, साध्वी कुलप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वियों ने समूह गीत के साथ नवागंतुक साध्वीश्री जी का स्वागत किया। सभा की ओर से संपत बैद, अजित बैंगानी ने स्वागत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मंडल ने किया। संचालन भावना दुगड़ और अलका बांठिया ने किया।

संक्षिप्त खबर

सेवा-उपासना में पहुँचा विजय नगर का प्रतिनिधि मंडल

विजयनगर। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा विजयनगर का प्रतिनिधि मंडल साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा ४ के दर्शनार्थ तलेगांव, महाराष्ट्र पहुंचा। प्रतिनिधि मंडल ने पेन, महाराष्ट्र में विराजित युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी, साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी, मुख्यमुनि श्री महावीर कुमार जी, साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी आदि चारित्रात्माओं के भी दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, निवर्तमान अध्यक्ष राजेश चावत, तेयुप अध्यक्ष राकेश पोखरणा, मंत्री कमलेश चोपड़ा, महिला मंडल अध्यक्षा मंजू गादिया, मंत्री दीपिका गोखरू, सुनीता पींचा ने साध्वी वृंद की सेवा उपासना कर उनके विहार कार्यक्रम की जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर साध्वी श्री पावनप्रभा जी ठाणा ४, साध्वी श्री सोमयशा जी ठाणा ४ की उपासना का भी अवसर प्राप्त हुआ। सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने सभी साध्वी वृंद के सुखद विहार हेतु मंगलकामना व्यक्त की। सदस्यों ने लोनावाला में तेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी के भी दर्शन सेवा का लाभ लिया। यात्रा में हिरियुर से तेजराज चोपड़ा भी साथ थे।

प्रेक्षाध्यान से पाएं चित्त की शांति

नोखा। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रदत्त प्रेक्षाध्यान का प्रयोग जीवन में शांति लाता है। कषाय कम होते हैं, तनाव दूर होता है। महाप्राण ध्वनि, कायोत्सर्ग, अनुलोम-विलोम से अनेक बीमारियाँ दूर होती हैं। व्यक्ति प्रेक्षाध्यान को जिंदगी का प्रमुख बिंदु बनाएं। यह विचार प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका सुषमा मरोठी ने प्रयोग करवाते हुए रखे। सभा अध्यक्ष इंदरचंद बैद 'कवि' ने बताया कि त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर में अनेक लोगों ने भाग लिया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका सुषमा मरोठी का सम्मान शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा सुमन देवी मरोठी व तेरापंथ सभा से अध्यक्ष इंदरचंद बैद व उपासक अनुराग बैद ने साहित्य भेंट कर किया।

सुनहरे भविष्य के लिए लक्ष्य बनाए

तिरुकोइलूर (तमिलनाडु)। डॉ. साध्वी गवेषणाश्री जी तिरूकोइलूर से विहार कर बाल शिक्षा हाईस्कूल में पधारे। बच्चों को सुनहरे भविष्य की परिकल्पना के लिए कुछ बिंदुओं का उल्लेख करते हुए साध्वीश्री ने कहा- यह बचपन की अवस्था ज्ञानार्जन के लिए होती है। अभी से एक लक्ष्य बनाएं और अर्जुन की तरह उस लक्ष्य को सामने रखें। अभी से संकल्प लें कि जीवन में कभी नशा नहीं करेंगे, तंबाकू, गुटखा आदि का सेवन नहीं करेंगे। सभी के भीतर सद्भावना का विकास हो। साध्वी वृंद ने बच्चों को कुछ प्रयोग भी करवाये।

संथारा समाचार

फरीदाबाद। साध्वी संगीतश्री जी ने गुलाब देवी बैद को जागरूकता के साथ अनशन स्वीकार करवाया। लगभग ५ मिनट बाद ही चौविहार संथारा सीज गया। साध्वी संगीतश्री जी ने कहा कि व्यक्ति आता है और चला जाता है परंतु उनके गुणों की सौरभ सबको सुरभित करके जाती है। गुलाबबाई ने बड़ी जागरूकता के साथ अनशन स्वीकार किया। वो सरल स्वभावी थी, परिवार में धर्म के अच्छे संस्कारों का बीजारोपण किया। इनके परिवार से धर्मसंघ में दीक्षित मुनि ध्यानमूर्ति जी गुरु चरणों में सेवारत हैं।

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

विशेषताओं का पलड़ा भारी और कमियों का पलड़ा हल्का बने : आचार्यश्री महाश्रमण

पेण, रायगड।
२९ फरवरी २०२४

जनोद्धारक परम पावन आचार्य श्री महाश्रमण जी कोंकण क्षेत्र में अणुव्रत यात्रा के साथ आज पेण गांव में पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि जैन वांग्मय में कषाय शब्द का प्रयोग हुआ है। कष-आय अर्थात् कर्म मल का आगमन जिनसे होता है वे कषाय हैं।

कषाय और योग ये दो चीजें हैं। पाप कर्म बंध कराने में कषाय का योगदान होता है। भीतर में कषाय बिल्कुल न रहे तो पाप कर्म का बंध नहीं हो सकता। क्रोध, मान, माया और लोभ, ये चार कषाय हमारी चेतना को कलुषित करने वाले हैं। शास्त्र में बताया गया कि क्रोध प्रीति का नाश करने वाला होता है।

मान से विनय का और माया से मित्रता का नाश होता है। लोभ तो सब कुछ नाश करने वाला, बड़ा विनाशक होता है। इससे प्रीति, विनय और मित्रता सब का नाश हो सकता है। क्रोध एक वृत्ति है, कभी-कभी गुस्से में व्यक्ति अकरणीय कार्य भी कर देता है। यह मनुष्य का शत्रु है, इसे छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। हम शांति रखें, धैर्य रखें, अधीर न बनें। गुस्सा करना बड़ी बात नहीं है, क्षमा रखना वीरता का भूषण है। कोई हमें गाली भी दे पर हम स्वीकार ही नहीं करे तो हमें क्या हानि हो सकेगी ?

मौके पर कड़ी बात भी कही जा सकती है, पर वह भी शांति से कही जाए। कभी कहना पड़े तो कभी सहना भी चाहिए।

प्रयास यह हो कि बात कहने में शान्ति रखें, हर स्थिति में शांति रखें। प्रेक्षाध्यान की अनुप्रेक्षा से गुस्सा कम करने का प्रयास कर सकते हैं। हमारी विशेषताओं का पलड़ा भारी बने और कमियों का पलड़ा हल्का बने।

गुस्सा आना भी एक कमजोरी है। क्रोध स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है, दूसरों के लिए भी कष्टप्रद हो सकता है और कषाय से हमारे पाप कर्म का बंध भी हो सकता है। छोटे सहन करते हैं, तो बड़े भी सहन करने का प्रयास करें। गुस्सा नियंत्रण में रहे तो परिवार, समाज और खुद के दिमाग में भी शांति रह सकती है। किसी चीज का अहंकार भी नहीं करना चाहिये। पद, संपत्ति, ज्ञान, सत्ता, बल आदि का भी घमंड नहीं करना चाहिए। इनका सदुपयोग तो सेवा में होना चाहिए।

मनुष्य माया, छल-कपट से दूर रहें, लोभ को कम करने का प्रयास करे और संतोषी बनने का प्रयास करे। कषायों से हल्का रहने का प्रयास कल्याणकारी बात हो सकती है।

कार्यक्रम का कुशल संचालन हुए मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

अति लाभ होने पर भी इच्छाओं को रखें अल्प : आचार्यश्री महाश्रमण

तारा, पनवेल।
२८ फरवरी २०२४

अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने रायगढ़ जिले के तारा गांव में पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है जैसे-जैसे लाभ होता है, वैसे-वैसे लोभ होता है। जैसे-जैसे आदमी को प्राप्त होता है, उसे और ज्यादा पाने की आकांक्षा पैदा हो जाती है। आदमी को अति लोभ नहीं करना चाहिए, लोभ सर्वगुणों का विनाश करने वाला होता है।

लोभ को जीतना है तो उसका उपाय है- संतोष। संतोष की अनुप्रेक्षा करें, अनुचिंतन करें। ज्यों-ज्यों संतोष का भाव बढ़ेगा, त्यों-त्यों लोभ का भाव कमजोर पड़ सकेगा।

कहा गया है- **जब आए संतोष धन, सब धन धूलि समान ।**

एक संतोष का धन आ जाता है, तो अन्य सारे धन धूल के समान हो जाते हैं। संतोष परम सुख है।

अति लाभ होने पर भी इच्छाओं को स्वल्प रखने का प्रयास करें। उपलब्धियां हैं, तो भी उपभोग का संयम रखें ।

श्रावक के १२ व्रतों में इच्छा परिमाण और भोगोपभोग परिमाण व्रत का उल्लेख मिलता है। गृहस्थ अपने भोग और उपभोग को सीमित करने का प्रयास करें। साधु के जीवन में तो संतोष होना ही चाहिए, गृहस्थों को भी संतुष्ट मानस वाला होना चाहिये। दुनिया में बहुत सी वस्तुएं हैं पर सब की सब हमारे उपयोग में नहीं आ सकती। निजी जीवन के लिए पदार्थों के उपयोग का सीमाकरण करना चाहिये। कपड़ों, द्रव्यों आदि उपभोगों का परिसीमन करना चाहिए ।

लोभ की वृत्ति आदमी से अपराध भी करा सकती है।हिंसा, झूठ, चोरी आदि पाप आदमी लोभ के कारण कर सकता है। लोभ को पाप का बाप कहा जाता है। हम लोभ के भाव को नियंत्रित करने का प्रयास करें।

चौदह गुणस्थानों में दसवें गुणस्थान तक लोभ का अंश विद्यमान रहता है। गुस्सा ,अहंकार, माया खत्म हो जाती है पर लोभ बना रहता है। बारहवें गुणस्थान में लोभ समाप्त हो जाता है।

पैरों में मजबूत जूते पहल लिए जाएं, फिर कांटे क्या कर सकते हैं? एक संतोष मन में आ गया तो लोभ क्या कर सकता है? नैतिकता, अहिंसा के लिए लोभ के भावों को कमजोर करना अपेक्षित होता है। भीतर के भाव गहरे शुद्ध हैं तो गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी होने पर भी आदमी अपराध में नहीं जाएगा। ये तीनों हिंसा के निमित्त बन सकते हैं पर ये मूल उपादान नहीं हैं। अलोभ की चेतना जाग जाए तो आदमी गलत रास्ते का चुनाव नहीं करेगा। इसलिए लोभ को अलोभ से जीतने का प्रयास करें। पूज्य प्रवर के स्वागत में अनिल कांबले ने अपनी भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

धर्म का संचय कर भरें अध्यात्म का कलश : आचार्यश्री महाश्रमण

शिवकर, न्यू पनवेल।
२७ फरवरी २०२४

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्य श्री महाश्रमणजी तेरापंथ विश्व भारती से विहार कर शिवकर पधारे। मंगल देशना प्रदान कराते हुए महायोगी ने फरमाया कि त्याग का बहुत बड़ा तत्त्व है। पदार्थों, संबंधों, पापकारी प्रवृत्तियों और भोगों का परित्याग यदि अच्छे रूप में हो जाए तो आदमी मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

मोक्ष प्राप्ति के दो उपाय बताए गए हैं- त्याग और तप। हमें मनुष्य जन्म प्राप्त है, इसमें जितना त्याग, तप, संवर और निर्जरा का आराधन किया जाये, मनुष्य जीवन उतना ही सार्थक बन सकता है। कहा गया है कि राग के समान दुःख नहीं है और त्याग के समान कोई सुख नहीं है। त्याग करने वाला त्यागी होता है। त्याग भी दो प्रकार के हो सकते हैं- ऊपरी त्याग और भीतरी त्याग। कोई विवशता या अभाव में पदार्थों का उपयोग नहीं कर पाता वह वास्तव में त्याग नहीं है। भीतर के वैराग्य भाव से यदि कुछ छोड़ा जाए वह त्याग होता है। सुख-सुविधा के उपलब्ध होने पर भी जो उनसे पीठ फेर लेता है

वह सही रूप में त्यागी है।

छोटी उम्र में घर-परिवार त्याग कर साधु बन जाना बहुत बड़ा त्याग है। परम पूज्य आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ जी ने बचपन में ही साधुत्व स्वीकार कर लिया था। साधु, जिसने सब कुछ त्याग दिया, संसार से नाता तोड़ मोक्ष का मार्ग चुन लिया, वह राजाओं से भी बड़ा है। बचपन में साधु बनकर संयम पालन करना बड़ी बात होती है।

गृहस्थ जीवन में भी त्याग-संयम किया जा सकता है। भोजन के पश्चात नियत समय के लिए त्याग, रात्रि में भी त्याग आदि किए जा सकते हैं। त्याग से धर्म का संचय कर अध्यात्म के कलश को भरना चाहिए।

गृहस्थ धन का संचय करते हैं, साथ में धर्म का संचय भी करें। रोज एक सामायिक होती रहे, छोटे-छोटे त्याग होते रहें, उन्हें भी धीरे-धीरे और बढ़ाते रहें।

साधु के तो बड़ी पूंजी संयम है, उसे भी स्वाध्याय, तपस्या आदि से और बढ़ाना चाहिये। जितनी त्याग-तपस्या करेंगे उतना धर्म का संचरण होगा, आगे के लिए कल्याणकारी हो सकेगा।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**